हिंदू राष्ट्र रक्षक महाराजा सुहेलदेव

पल्लवी सिंह

वास्तव में भारत का इतिहास गौरवपूर्ण एवं रोमांचकारी घटनाओं से परिपूर्ण हैं। इतिहास के पन्नों को खगालने पर हमें कुछ ऐसे वीरों के शौर्य एवं पराक्रम के बारे में जानकारी प्राप्त होती हैं जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी मातृ भूमि की रक्षा के लिए अपने अदभुत पराक्रम एवं शौर्य का परिचय दिया तथा अपनी जननी जन्मभूमि की हर संभव रक्षा की। ऐसे वीरों में हिंदू राष्ट्र रक्षक महाराजा सुहेलदेव हमारी सभ्यता में सदैव आदरणीय रहेंगे। अब इसे इतिहास का सौभाग्य कहे या दुर्भाग्य या समकालीन इतिहासकारों की मेहरबानी जिन्होंने अपने लेखन में इनकी परिचर्चा तक नहीं की है, न ही इतिहास में वह स्थान दिया जो अन्य दिल्ली सल्तनत के शासकों और मुगलों को दिया गया है।

11 वीं सदी भारतीय इतिहास का वह काल हैं, जब भारत की पुण्य भूमि मुस्लिम लुटेरे आक्रमणकारी महमूद गजनवी के आक्रमणों से थर्रा उठी थी। वह आतंताई लुटेरा जिस ओर से जाता उस ओर मौत और लूट का मंजर छा जाता था। 1001 से 1027 के बीच उस लुटेरे मुस्लिम आक्रमणकारी ने हिंदू धर्म के प्रसिद्ध मंदिरों को न सिर्फ़ लूटा बल्कि वहां की मूर्तियों को भी खंडित करता गया। मथुरा, थानेश्वर, कन्नौज के प्रसिद्ध मंदिरों को लूटते हुए वह सौराष्ट्र के सोमनाथ मंदिर को भी लूटने पहुंचा। 17 वीं सदी के इतिहासकार अब्दुल रहमान चिश्ती के अनुसार गजनवी के इस आक्रमण में उसका भांजा सैयद सालार मसूद गाज़ी भी उसके साथ था। 1030 में महमूद गजनवी की मृत्यु के बाद गज़वा ए हिंद के उद्देश्य से उसने उत्तरी भारत पर आक्रमण किया।

पूर्व मध्य काल का वह समय भारतीय राजनीति के उथल पुथल का काल था। सम्राट हर्षवर्धन के पश्चात् सम्पूर्ण उत्तर भारत छोटे छोटे राजपूत राजाओं के अन्तर्गत विभाजित हो गया था। ये राजा आपस में ही युद्धों में उलझे रहते थे।

इस काल की सामाजिक प्रस्थितियां भी अस्त व्यस्त थी। समाज को विभिन्न प्रकार की जटिलताओं ने घेर रखा था, तत्कालीन अरबी लेखक अल बरूनी अपनी पुस्तक ' किताब उल हिंद ' में भारतीय समाज को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एवं अंत्यज जातियों में बटा हुआ

 ISSN:2583-8849

बताता है। उसके अनुसार भारतीय समाज में अनेक कुरीतियां व्याप्त थी, मंदिर एवं मठ विलासिता के केंद्र बन गए थे।

इतनी विषमताओं के बावजूद भी भारत आर्थिक रूप से बहुत समृद्ध था। यहां के सुती और रेशम के कपड़ों व मसालों की मांग सम्पूर्ण विश्व में थी, जिस कारण विदेशों से सोने और चांदी की आमद भारत में होती थी।

गुर्जर प्रतिहार राजाओं ने कुछ समय तक सम्पूर्ण उत्तर भारत में शांति स्थापित की पर उनके पराभव उपरांत एक बार फ़िर अराजकता का माहौल पूरे उत्तर और मध्य भारत में फ़ैल गया। कन्नौज में गहड़वालो और खजुराहो में चंदेलों के उदय से पुनः शांति व्यस्था स्थापित हुई। अवध 920 ई. के लगभग गुर्जर प्रतिहार राजाओं के हाथों से निकल चुका था, इसके अधिकांश भाग पर बैस क्षत्रिय राजा त्रिलोचन पाल का शासन स्थापित था। आर्चेअोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया भाग 1 के पृष्ठ सं 329 के अनुसार त्रिलोचन पाल के उपरांत मोरध्वज, हंस ध्वज, मकरध्वज, सुघव ध्वज एवं सुहद ध्वज राजा हुए। अवध गजेटियर में सुहद ध्वज को ही सुहेलदेव बताया गया हैं।

इन तथ्यों के उपरांत भी सुहेलदेव के जन्म, वंश और जाति को लेकर इतिहासकारों में एकमत नहीं हैं। अब्दुल रहमान चिश्ती कृत ' मिरात ए मसूदी ' में सुहेलदेव को भर थारू राजा माना गया है। गुरु सहाय दीक्षित की कविता ' श्री सुहेल बवानी ' के अनुसार सुहेलदेव जैन राजा थे, काशी प्रसाद जायसवाल की पुस्तक ' हिस्ट्री ऑफ इंडिया' के अनुसार इन्हे भारशिव क्षत्रिय बताया गया है। डॉ. परशुराम गुप्त अपनी पुस्तक ' राष्ट्र रक्षक सुहेलदेव ' में सुहेलदेव को पासी राजा बताते है, प्रोफ़ेसर बद्री नारायण ने ' fascinating hindutva : saffron politics and dalit mobilization ' में सुहेलदेव को भर नायक बताया है। डॉ. जगदेव सिंह इन्हे बैंस क्षत्रिय मानते हैं।

डॉ. परशुराम गुप्त इनके पिता का नाम श्रावस्ती नरेश प्रसेनजीत बताते है एवं इनका जन्म माघ मास की बसंत पंचमी के दिन 990 ई. मानते है, वहीं कुछ इतिहासकार इनका जन्म संभवत 996 ई. में माघ कृष्णपक्ष चतुर्थी को मानते हैं।

बालार्क ऋषि के गुरुकुल में सुहेलदेव ने शस्त्र एवं शास्त्र की शिक्षा ली। बालार्क ऋषि का आश्रम उसी जगह पर बताया जाता है जहां आज सैयद

सलार मसूद गाज़ी की दरगाह हैं। 1027 में बसंत पंचमी के दिन 31 वर्ष की आयु में सुहेलदेव श्रावस्ती के राजा बने। इनका राज्य उत्तर में नेपाल दक्षिण में कौशांबी पश्चिम में गढ़वाल व पूर्व में वैशाली तक फ़ैला हुआ था तथा उनके अधीन बहुत से भर सामंत थे। उन्होंने अपने राज्य की सुरक्षा हेतु अशोकपुर, जरौली, भरौली, दुगांव आदि अनेक स्थानों पर मिट्टी के विशाल दुर्ग बनवाए थे।

उधर सैयद सालार मसूद अपने पिता गाज़ी सैयद सालार साहू के साथ भारत को मुस्लिम राष्ट्र बनाने के उद्देश्य से निकल चुका था।वह सिंधु नदी पार कर मुल्तान, दिल्ली, मेरठ जीतते हुए व वहां के शासकों को इस्लाम या मौत में से एक कबूल करवाते हुए सतरिख (बाराबंकी) तक आ पहुंचा। सतरिख में सैयद सालार मसूद को न जाने क्या भाया की उसने यहां टिकने का फैसला किया। यहां से उसने सैफुद्दीन मियां रज्जब एवं हठीले पीर के नेतृत्व में एक विशाल सेना बहराइच और उसके आसपास के राजाओं को जीतने के लिए भेजी। मुस्लिमों से अपनी रक्षा के लिए सभी सामंत राजा महाराज सुहेलदेव के पास पहुंचे। सुहेलदेव ने जब मुस्लिमों के इस आक्रमण के बारे में सुना तो हिंदू धर्म की रक्षा के लिए वे इन 21 राजाओं की संयुक्त सेना के साथ इस सैयद सालार मसूद की सेना को सबक सिखाने निकल पड़े। 15 जून 1033 को हिंदू सेना और गाजियों की सेना के बीच भयंकर संघर्ष हुआ। हिंदू सेना ने गाजियों कि इस सेना को भाजियों की तरह काटना शुरू कर दिया। सायंकाल के समय युद्ध को रोकने की घोषणा हो गई, लेकिन मुस्लिम सेना ने छल किया वे रात के समय में ही सोए हुए हिंदू सैनिकों पर हमला कर दिए। इस युद्ध के नियम खिलाफ हुए आक्रमण के कारण हिंदू सेना को भारी नुकसान हुआ। इस युद्ध का कोई खास परिणाम नहीं निकला। जल्द ही मुस्लिमों ने एक बार बार फिर आक्रमण किया, इस युद्ध में पुन: हिंदू राष्ट्र रक्षक सेना जेहादियों पर भारी पड़ी। हजारों की संख्या में गाजियों को हुरो के पास भेज दिया दिया गया। सायंकाल के समय एक बार फिर युद्ध विराम की घोषणा हुई, दोनों ही सेनाएं अपने अपने शिविरों में आराम करने लगी। पिछली बार की भांति इस बार फिर जेहादियों ने छल करने का प्रयास किया, पर इस बार हिंदू सेना सतर्क थी उन्होंने जहर बुझे कीले अपने शिविरों के चारों और लगा दी थी जिस कारण मुस्लिमों को भारी नुकसान

हुआ उनके अनगिनत घोड़े और सैनिक इन विष बुझे कीलो का शिकार हो गए पनी इस भीषण हार से बौखलाया सैयद सालार मसूद गाज़ी प्रतिशोध लेने के लिए स्वयं डेढ़ लाख की मुस्लिम सेना लेकर कुटिला नदी के किनारे पहुंचा। 10 जून 1034 को हुए भीषण युद्ध में वह जेहादी आतताई अपनी जेहादी सेना के साथ मारा गया। हिंदू सैनिकों ने युद्ध के मैदान को छोड़ भागती जेहादी सेना के सैनिकों को पीछा करते हुए तब तक मारा जब तक एक भी मुस्लिम सैनिक न बचा। इस्लामी सेना की इस भीषण पराजय ने भारतीय हिंदू शूरवीरों का ऐसा खौफ मुस्लिमों के अंदर भर दिया की अगले 150 सालों तक किसी भी जेहादी आक्रमणकारी ने भारतवर्ष की ओर आंख उठा कर भी नहीं देखा।

संदर्भ ग्रंथ-

- चिश्ती, अब्दुल रहमान, ' मीरात ए मसूदी ',1605;
- गुप्त, डॉ. परशुराम, ' राष्ट्र रक्षक महाराजा सुहेलदेव ',लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, 2014;
- डाउसन, एलियट एंड, ' दी हिस्ट्री ऑफ इंडिया, एज टोल्ड बाय इट्स ओन हिस्टोरियन', ऑक्सफोर्ड, लदंन, 1867;
- महमूद, ताहिर, ' दी दरगाह ऑफ सैयद सालार मसूद गाज़ी इन बहराइच', ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 1989;
- बद्रीनारायण, ' हिंदुत्व का मोहिनी मंत्र', राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 2014;
- सिंह, डॉ. जगदेव, ' कौशलपुरी श्रावस्ती', स्वयं, 1975;
- त्रिपाठी, अमीश,' भारत का रक्षक महाराज सुहेलदेव', इका पब्लिकेशन, दिल्ली, 2020;

आलेख-

- 'राष्ट्र रक्षक वीर शिरोमणि महाराजा सुहेलदेव', सुहेलदेव सेवा समिति बहराइच, 2003;
- मणि पदम् श्री, ' राजा सल्हेस', मैथिली प्रकाशन, कोलकाता,1973;
- कुसुमा सल्हेस नाटक, पटना

शोध छात्रा इतिहास विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी